पिछले जन्म

मैं जब आध्यात्मिक जीवन में नहीं था, तब मैंने लोगों से जीवन की समस्याओं के बारे में पूछा, तो वे कहते थे कि यह हमारे पिछले जन्मों के पापों के कारण है, हमारे कर्मों का नतीजा है, और यह हमारी नियति है, और हम इसे बदल नहीं सकते।

लेकिन जब मैंने ध्यान करना शुरू किया, तो मैंने दूसरों के माध्यम से महसूस किया कि अगर हम अपने भूतकाल को समझते हैं, तो हम अपनी वर्तमान समस्याओं को दूर कर सकते हैं। यानी, अगर हम अपने पिछले जन्मों को देखते हैं, तो हमारे वर्तमान जीवन की समस्याएं दूर हो जाएंगी। हालांकि, मैंने देखा है कि कुछ लोग अस्थायी राहत पाते हैं, उनकी समस्याएं वापस आ जाती हैं। मैंने यह भी देखा है कि कई लोग जिन्होंने अपने पिछले जन्मों को देखा है, वे अभी भी अपनी पीड़ा में फंसे हुए हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने अपने पिछले जन्मों में खुद को वेश्या, चोर, हत्यारा, या धोखेबाज के रूप में देखा, जो यह महसूस करने को मजबूत करता है कि उन्होंने कुछ गलत किया था। यह महसूस बना रहता है और उन्हें दर्द देता है जब वे इसे याद करते हैं।

इसी तरह, मैंने दूसरों से सीखा कि अगर हम अपने पिछले जन्मों में जिन्हें हमने ठेस पहुंचाई, उनसे क्षमा मांगते हैं और उनसे अपने पिछले जन्म की भूमिका वापस लेते हैं, तो हमारे वर्तमान जीवन की समस्या कम हो जाएगी। हालांकि, भले ही कुछ लोगों ने ऐसा किया और अस्थायी राहत पाई, मैंने देखा कि उनकी समस्या फिर से वापस आ गई।

जब मैंने सोचा कि यह क्यों हो रहा है और समाधान क्या है, तो मुझे एक संदेश मिला कि केवल समस्या से संबंधित पिछले जन्मों को देखना पर्याप्त नहीं है; हमें उन्हें दिव्य दृष्टिकोण से देखने की जरूरत है, 'मैंने गलत किया' ऐसी भावना के साथ नहीं। केवल तभी हम समस्या का शाश्वत समाधान खोज पाएंगे।

यहाँ समझने का एक और महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि इस जीवन में समस्या का कारण हमारे पिछले जन्म का पाप है। लेकिन हमने अपने पिछले जन्म में पाप क्यों किया? अपने पिछले जन्म के पिछले जन्म के कारण। उदाहरण के लिए, अगर आपको इस जीवन में धोखा दिया गया है, तो इसका कारण यह है कि आपने अपने पिछले जन्म में धोखा दिया था। लेकिन आपने अपने पिछले जन्म में धोखा क्यों दिया? क्योंकि आपको अपने पिछले पिछले जन्म में धोखा दिया गया था। चूंकि दोनों पक्ष दोषी हैं, इसलिए केवल एक पिछले जन्म को देखकर यह निष्कर्ष न निकालें कि आप गलत थे।

इस तरह, हम एक जीवन में धोखा देते हैं और दूसरे जीवन में धोखा खाते हैं। यहाँ, दोनों ही गलत हैं, इसलिए मुझे अकेले माफी मांगने की जरूरत नहीं है, दोनों को एक दूसरे से माफी मांगनी चाहिए या बिल्कुल माफी मांगने की जरूरत नहीं है, यह समझते हुए कि यह एक निपटारा (settlement) है, महसूस करें कि मैं अपने भीतर कर्म बंधन को समाप्त कर रहा हूँ। भूतकाल को ठीक करने के लिए, अपने भीतर कर्म बंधन को समाप्त करना ही पर्याप्त है, दूसरों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है, यह समझें।

इसके अलावा, अगर हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि किसने पहले धोखा दिया, तो यह सवाल उठता है कि जन्म का चक्र कैसे शुरू हुआ, क्या जन्म कर्म के कारण है या कर्म जन्म के कारण है। अगर आप जन्म नहीं लेते, तो आप कर्म नहीं कर सकते, अगर आप कर्म नहीं करते, तो आप जन्म नहीं ले सकते। फिर यह दुविधा उत्पन्न होती है कि क्या पहले बीज आया या पेड़। फिर यह समझ में आता है कि न तो जन्म पहले आया और न ही कर्म, बल्कि भगवान पहले हैं। साथ ही, हम समझते हैं कि एक भूमिका दूसरी भूमिका का कारण नहीं है, बल्कि सभी भूमिकाओं का कारण वह दिव्य शक्ति है जो परे है, जो सर्वोच्च है।

समस्याओं का शाश्वत समाधान करने के लिए, आपको द्वैत के खेल को बंद करना होगा। आपने पिछले जन्मों में विरोधी अच्छे-बुरे भूमिकाएं निभाई हैं, इसलिए अब आपको उनके बीच शत्रुता को जारी रखने की आदत को छोड़ना होगा और उनके बीच मित्रता बनानी होगी। इसका मतलब है कि पिछले जन्मों से संबंधित सभी अच्छे-बुरे भूमिकाओं को वैसे ही स्वीकार करना,

उनसे प्रेम करना, और उन्हें दिव्य दृष्टिकोण से देखना। यानी, आपको सही और गलत से परे दिव्य चेतना की स्थिति तक पहुंचना होगा। दूसरे शब्दों में, आपको अच्छे और बुरे दोनों के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना चाहिए और स्थिति के अनुसार दोनों का उपयोग करना चाहिए, और खुशी से जीवन जीना चाहिए।

आदर्श व्यक्ति

इस आदर्श दिव्य चेतना अवस्था को प्राप्त करने के लिए, आपके वर्तमान जीवन आदर्श होना चाहिए। आपको आदर्श व्यक्ति (Role Model) बनना होगा। इसका मतलब है कि आपको अपने जीवन में अभी हो रही हर घटना को दिव्य देखना होगा, और केवल तभी उन घटनाओं से संबंधित पिछले जन्म की भूमिकाएं आपके साथ विलीन होंगी। अगर कोई आपको इस जीवन में परेशान कर रहा है या अगर आप दूसरों को परेशान कर रहे हैं, तो सभी को आप दिव्य देखना होगा, और केवल तभी पिछले जन्म की भूमिकाएं आपके साथ विलीन होंगी। क्योंकि केवल तभी आप उस अवस्था तक पहुंचेंगे जहां आप समझ पाएंगे कि पिछले जन्मों में कुछ घटनाएँ क्यों हुआ।

इसलिए, आपको सही और गलत से परे जाने के लिए आवश्यक आध्यात्मिक अभ्यास करना होगा। क्योंकि, आपकी सभी समस्याओं का मूल यह है कि आप सही और गलत से संबंधित चेतना की अवस्था में फंसे हुए हैं। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी को धोखा देते हैं या कोई आपको धोखा देता है, तो धोखा देने और धोखा खाने दोनों को दिव्य अनुभवों के रूप में मानें, उनके बीच मित्रता बनाएं, और उन्हें दिव्य के रूप में अनुभव करें। केवल तभी धोखा से संबंधित पिछले जन्म की भूमिकाएं आपके साथ विलीन होंगी, अर्थात वे शुद्ध भूमिकाएं बन जाएंगी।

जब कोई आपको धोखा देता है, तो आप उस समस्या का शिकार बन जाते हैं, और जब आप अपने भीतर दिव्य को प्राप्त करते हैं, तो दिव्य आपको दिखाएगा कि यह रचना कहाँ हो रही है और आपको अनुभवी रूप से सिखाएगा।

कैसे? दिव्य कहता है, 'हर कोई मानता है कि उनका जीवन उनके भाग्य के अनुसार हो रहा है, जो सही है। इसलिए, उसे धोखा देना उसके भाग्य में लिखा होगा, और आपको धोखा खाना आपके भाग्य में लिखा होगा। इसलिए, यहाँ कोई गलत नहीं है। आप अपना जीवन बना रहे हैं, तो जिम्मेदारी लें, पता करें कि इस समस्या का मूल कहाँ है, इसे जैसा है वैसा ही स्वीकार करें, अपने भाग्य को बदलें, अर्थात इस समस्या से बाहर निकलने के लिए एक नया चयन करें, और इस समस्या से संबंधित अपने मन को साफ करें। केवल तभी आपको अपनी समस्या का समाधान मिलेगा।' यदि आप इस ज्ञान का अभ्यास करते हैं, तो आपको परिणाम मिलेंगे।

जब आप अपने भीतर के दिव्य या समस्या के सामने आत्मसमर्पण करते हैं, तो यह ज्ञान आपको सिखाया जाता है। जब आप इसे सीखते हैं और परिणाम प्राप्त करते हैं, तो यह विचार कि सम्पूर्ण सृष्टि आपके भीतर हो रही है, यह आपके मन में दृढ़ हो जाता है। तब, अगर आप अनिवार्य परिस्थितियों में दूसरों के साथ कठोर व्यवहार करते हैं, तो भूतकाल की गलतियों के लिए पछतावे की भावना समाप्त हो जाएगी, और आपको लगेगा कि आप वर्तमान में अपनी इच्छा के अनुसार काम कर रहे हैं, जो कि पसंद और नापसंद से परे है। पसंद और नापसंद को पार करने के बाद, आपके अंदर यह भावना जागृत होगी कि जो कुछ होता है वह सही है, और आप अच्छे और बुरे कर्मों के बंधन से मुक्त होंगे।

इसलिए, एक परिपक्व आत्मा की तरह आप कार्य करें। अपने जीवन में होने वाली हर घटना के लिए दूसरों को दोषी ठहराने के बजाय जिम्मेदारी लें और समझें कि यह आपके भाग्य के अनुसार हुआ। केवल तभी आप अपने भाग्य को भंग कर सकते हैं और दिव्य की ओर बढ़ सकते हैं। जब आप सोचते हैं कि आप सृष्टि के रचयिता हैं, तो आप आवश्यकतानुसार सृष्टि को जारी रख सकते हैं या भंग कर सकते हैं। अर्थात, आप अपने जीवन में स्वयं को ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर के रूप में अनुभव कर सकते हैं।

असाधारण लोग आत्म विमर्श करके, स्वयं को सुधारते हैं, खुद को पुनर्निर्मित करते हैं, जबकि सबसे निचले लोग दूसरों को दोष देते हैं और गिरते हैं। इसलिए, यदि आपके पास विवेक नहीं

है कि आप सृष्टि के रचयिता हैं, तो आप अपने इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जब आपको वांछित परिणाम नहीं मिलता है, और आप जिम्मेदारी लेने के बजाय दूसरों को दोष देते हैं, तो चाहे आप कितनी भी कोशिश करें, आपका जीवन आपके नियंत्रण में नहीं आ सकता है। आप उस असफलता को सफलता में नहीं बदल सकते हैं। आपको पीड़ित के रूप में जीवन जीना होगा, क्योंकि तब आपका जीवन आपकी इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि आपके भाग्य के अनुसार चलेगा। इसलिए, सब कुछ ध्यान में रखते हुए सही निर्णय लें।

इसी तरह, कुछ लोग सोचते हैं कि वे पिछले जन्म में ऋषि या योगी थे, इसलिए इस जन्म में उन्होंने अभ्यास करना बंद कर दिया है। लेकिन, चाहे आप पिछले जन्म में कितने भी उच्च स्तर के गुरु रहे हों, आपका पिछले जन्म का पात्र आपके वर्तमान जन्म के पात्र से निम्न है। क्योंकि भगवान हमेशा अपने भीतर नए गुणों का आविष्कार करता रहता है, इसलिए इस जन्म में आप क्या हासिल कर रहे हैं उस पर ध्यान दें। अपने ज्ञान को बढ़ाते रहें और विकसित होते रहें और अनुभव करे कि आप भगवान हैं।

पिछले जन्म देखना

पिछले जन्मों में गहराई से जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इससे नए समस्याएं पैदा हो सकती हैं। एक व्यक्ति ने अपने पिछले जन्म को देखा और भ्रमित हो गया। उसने पाया कि वह अपने पिछले जन्म में रोम में पैदा हुआ था और अपने नाम और अपनी पत्नी के नाम को जाना। अब तक, ठीक है। अब, वह जानना चाहता है कि उसकी पत्नी कहाँ है, और फिर उसे एहसास हुआ कि उसकी पिछले जन्म की पत्नी इस जन्म में उसकी बहन है। वह इस बात को जानकर स्तब्ध रह गया और मुझे इसके बारे में बताया। तब मैंने उन्हें सलाह दी कि वे पिछले जन्मों के पात्र को उसी जन्म तक सीमित रखो, और अगले जन्म में वही संबंधों को बनाने की कोशिश न करें। आप यह सब कुछ तभी समझ पाएंगे जब आप आत्म-ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसलिए, मैंने उन्हें सलाह दी कि वे पिछले जन्मों में गहराई से न जाएं और उनसे संबंधित विचारों को साफ करें।

ससुर के निधन के बाद, जब बहू गर्भवती हुई, तो घर में सभी लोगों ने सोचा, 'स्वर्गवासी ससुर पुनर्जन्म ले रहे हैं।' बच्चे के जन्म के बाद, माँ ने बच्चे को अपने ससुर के रूप में सोचा और दूरी बनाए रखी, सोचते हुए, 'मैं बच्चे के नग्न शरीर को कैसे देख सकती हूँ? मैं बच्चे को कैसे गले लगा सकती हूँ?' यह सही नहीं है क्योंकि बच्चा माँ के प्यार से वंचित रहेगा। इसलिए, प्रत्येक जन्म को उसी जन्म तक सीमित रखो, और अगर आप मेरे द्वारा पिछले उदाहरणों में बताए गए बातों का पालन करते हैं, तो आप आसानी से पिछले जन्मों से बाहर निकल जाएंगे।

पिछले जन्म क्या हैं?

एक जीवात्मा के रूप में, आप निरंतर आत्म-खोज की प्रक्रिया में लगे हुए हैं, "मैं कौन हूँ?" इस प्रश्न का उत्तर ढूंढते हुए। यह इच्छा आपको अनेक जन्म लेने के लिए प्रेरित करती है। द्वैत के विभिन्न भूमिकाओं और विशेषताओं के माध्यम से, आपने विभिन्न व्यक्तित्व बनाए और अनुभव किए, द्वैत की व्यापक समझ प्राप्त की। ये अनुभव ही अब हम पिछले जन्म की भूमिकाएं (पात्र) कहते हैं।

मैंने अपने भीतर के दिव्य से पूछा कि मैंने पिछले जन्मों में कौन सी भूमिकाएं निभाईं, तो मुझे यह संदेश मिला: 'तुमने अनगिनत जन्म लिए हैं, इसलिए विस्तार से सभी जन्मों को देखना असंभव है। इसलिए, मानो कि तुमने अपने पिछले जन्मों में इस पृथ्वी पर दिखने वाली सभी अच्छी और बुरी भूमिकाएं निभाई हैं और उन्हें अपने भीतर एकीकृत करो। इसलिए, हर विचार को भूतकाल या पिछले जन्मों से उत्पन्न हुआ समझें।' तब से, मैं इसी समझ के साथ अपना आध्यात्मिक अभ्यास जारी रखा हूँ।

यहाँ, "एकीकरण" का अर्थ है कि हमने अपनी शुद्ध ऊर्जा का उपयोग करके अनेक भूमिकाएं निभाईं और विभिन्न रूप बनाए। अब, हमें इन्हें सही ढंग से समझने की आवश्यकता है, इन्हें दिव्य रूप से अनुभव करना है, और इन्हें दिव्य ऊर्जा या शुद्ध ऊर्जा या परम आनंद या स्व-ऊर्जा में परिवर्तित करना है। उसके बाद, हम शुद्ध ऊर्जा में विलीन हो सकते हैं। परिवर्तन करने का तरीका सीखने के लिए "आंतरिक यात्रा" और "मार्गदर्शक" विषयों को पढ़ें।

वर्तमान जीवन का महत्व क्या है?

यह वर्तमान जन्म आपके पिछले जन्मों की तरह नहीं है। क्योंकि इस जन्म का उद्देश्य पिछले जन्मों की भूमिकाओं को एकीकृत करना और आत्मा और परमात्मा को शरीर में आमंत्रित करना है, ताकि एक दिव्य-मानव बन सकें। सभी को एकीकृत करने का मुख्य उद्देश्य हमारे उन जन्मों को जागरूकता में लाना है जिन्हें हम पसंद नहीं करते हैं, पसंद और नापसंद के बीच सामंजस्य और मित्रता बनाना, फिर से मिलना, और अनुभवी रूप से "मैं ईश्वर हूँ" की अनुभूति करना। इसका अर्थ है "मैं कौन हूँ?" इस प्रश्न का उत्तर ढूंढना। जब हम इन सभी चीजों को एक साथ लाते हैं, तो हम पूर्णता प्राप्त करते हैं और एक दिव्य-मानव बन जाते हैं। यह हमारी लंबी यात्रा को पूरा करता है, जिसे हम अनंत काल से कर रहे हैं, और हम एक नए संसार में प्रवेश करते हैं।

इसलिए, यह जन्म बहुत विशेष है। लेकिन यह सभी के लिए लागू नहीं होता है। यह केवल उन लोगों के लिए लागू होता है जिन्होंने अपने पिछले जन्मों में द्वैत के सभी गुणों का अनुभव किया है और उन्हें पार करने के लिए तैयार हैं ताकि गुणों से परे की अवस्था, अर्थात मुक्ति प्राप्त कर सकें। इसलिए, अपने भीतर पूछें कि क्या आप इस आध्यात्मिक अभ्यास को करने के लिए पात्र हैं। मेरी समझ के अनुसार, केवल वे लोग जो पात्र हैं वे इसे पढ़ेंगे और अभ्यास करेंगे।

इन सभी जन्मों को कैसे एकीकृत करें?

आपको बस इतना करना है कि जागरूक रहते हुए, प्यार से प्रत्येक पिछले जन्म की भूमिका को अपने मन में आमंत्रित करें, एक-एक करके। इसका अर्थ है कि आपको बाहरी और आंतरिक दोनों रूप से सभी पसंद और नापसंद को प्यार और स्वीकार करना होगा। तभी वे आएंगे। इसी तरह, जब आप इस वर्तमान जन्म में हुए सभी घटनाओं को दिव्य रूप से देख सकते हैं, तो सभी पिछले जन्म आपके भीतर एकीकृत हो जाएंगे।

लेकिन ये पिछले जन्म की भूमिकाएं हमसे नाराज हैं। क्योंकि जब हम एक नए रास्ते पर चलते हैं, तो हम उस रास्ते पर आने वाली स्थितियों के बारे में जागरूक नहीं होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हमें कई अकल्पित स्थितियों का सामना करना पड़ता है। अर्थात, जब हम एक अज्ञात रास्ते पर चलते हैं, तो कांटे हमारे पैरों को चुभ सकते हैं और चोट पहुंचा सकते हैं। इसी तरह, हमें पिछले जन्मों में कई अपमान और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके कारण, हमारे भीतर कुछ गहरी घावें बन गईं।

जीवात्मा ने महसूस किया कि वह इन घावों को पकड़े रहने से आगे नहीं बढ़ सकता था। अर्थात, वह एक नए जन्म और नए अनुभव को प्राप्त नहीं कर सकता था। इसलिए, जीवात्मा ने इन भूमिकाओं को कुछ समय के लिए नजरअंदाज कर दिया। जीवात्मा ने अपनी यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए पिछले जन्म की भूमिकाओं को नजरअंदाज किया। अब हमें उन सभी अनुभवों और घावों को अपने वर्तमान जीवन में एकीकृत करने और उन्हें ठीक करने का सही समय है। क्योंकि हमने इस वर्तमान जन्म को इसी उद्देश्य से चुना है। साथ ही, पृथ्वी पर वर्तमान में मौजूद ऊर्जा और समय इस के लिए अनुकूल हैं।

खासकर इस जन्म में, आत्मा के साथ एक विशेष संबंध है। इस संबंध के कारण, सभी पिछले जन्मों को मिलाकर अपने आप को भगवान के रूप में जानने का पूर्ण अनुभव संभव है। यह सब "मैं कौन हूँ?" इस प्रश्न का पूर्ण उत्तर प्राप्त करने के बारे में है।

यह सही समय है उन सभी भागों को एकीकृत करने का जो पीछे छूट गए थे। अब वे आपकी वर्तमान वास्तविकता के करीब आ रहे हैं। अब आपके जो सपने आ रहे हैं, वे भी पिछले जन्मों के अनुभवों से संबंधित स्मृतियाँ हैं। पिछले जन्मों को एकीकृत करने के लिए आपको कोई प्रयास नहीं करना है। बस ध्यान करें और उन्हें आने के लिए आमंत्रित करें। क्योंकि लंबे समय से अलग की गई ऊर्जा अब आपके शुद्ध प्रेम और स्वीकृति के लिए आपके पास आ रही है।

मुक्त करें

ये सभी भूमिकाएँ आपके चेहरे पर एक मधुर मुस्कान देखना चाहती हैं, और आपको समझना चाहिए कि प्रत्येक भूमिका दिव्य है, और आपके हृदय में न तो आपके प्रति और न ही प्रत्येक भूमिका के प्रति कोई द्वेष नहीं है। वे चाहती हैं कि आप उन्हें पूर्ण प्रेम के साथ मुक्त करें, न कि अस्वीकार के साथ। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि, आप उन्हें बदलने की कोशिश किए बिना, उन्हें सिर्फ पूरी तरह समझकर और उन्हें जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करके छोड़ सकते हैं। जब आप ध्यान करेंगे, तो आपको यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आएगी।

लेकिन आप मुझसे ऐसे पूछ सकते हैं - 'मेरे शरीर और मन को चिकित्सा की जरूरत है!' लेकिन वास्तव में, सिर्फ उस ऊर्जा को चिकित्सा की जरूरत है जो पिछले जन्मों की भूमिकाओं की हैं, जो अभी भी उसी रूप में अटकी हुई हैं और विकसित नहीं हो पा रही हैं। आपके भीतर की फंसी ऊर्जा, जो रुक गई है, उसे मुक्ति और स्वतंत्र किया जाना चाहिए ताकि वह मुक्ति या समाधान प्राप्त कर सके। तभी वह एक नए तरीके से यात्रा कर सकती है और आपकी मदद कर सकती है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आपको क्रोध से नफरत है। जब आप क्रोध से प्रेम करते हैं, तो वह अपनी अवस्था से विकसित होता है और आपको क्रोध के उपयोग के बारे में अनुभवी रूप से बताता है, आपको इसका दिव्य दृष्टिकोण देता है, और यह एक दिव्य शक्ति में परिवर्तित हो जाता है। जब क्रोध से संबंधित पिछले जन्म की भूमिका दिव्य हो जाती है, तो आपके शरीर में मौजूद समस्या गायब हो जाती है। फिर आपको एहसास होता है कि समस्याओं का समाधान पिछले जन्म की भूमिकाओं में फंसी हुई ऊर्जा को मुक्त करना और उन्हें विकसित करने में मदद करना है।

ये पिछले जन्म की भूमिकाएं एक राय पर अटक गई हैं और स्थिर हो गई हैं। इन्हें मुक्त करने का मतलब है उस रूप को मुक्त करना जिसमें वे अटक गई हैं। यह पिछले जन्मों के

दुखों और कठिनाइयों को मुक्त करने के समान है। वास्तव में, आप यहाँ पिछले जन्मों के अस्तित्व से इनकार नहीं कर रहे हैं, बल्कि केवल उस भ्रम को मुक्त कर रहे हैं जो अटक गया है। अर्थात, आप पिछले जन्म की भूमिकाओं से संबंधित मनोभावों को मुक्त कर रहे हैं और उन्हें शुद्ध और दिव्य भूमिकाओं के रूप में देख रहे हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आपने पिछले जन्म में कैंसर से मृत्यु प्राप्त की थी, तो वह भूमिका सोच सकती है, "कैंसर मुझे जरूर मार डालेगा।" जब आप अपनी मान्यता को बदलते हैं, "मैं कैंसर के माध्यम से दिव्यता और अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता हूँ," और संबंधित भूमिकाओं को अपने चेतना में आमंत्रित करते हैं, उन्हें यथारूप स्वीकार करते हैं, और उन्हें दिव्यता की ओर विकसित होने की स्वतंत्रता देते हैं, तो वे भी अपनी राय बदलेंगे और आपको उस मुद्दे के माध्यम से दिव्यता प्राप्त करने में मदद करेंगे। यही तरीका है जिससे आप अपना स्वास्थ्य पुनः प्राप्त करेंगे।

यहाँ भ्रम का अर्थ है कि यह अभी भी विकसित होने की आवश्यकता है। यह झूठा नहीं है, लेकिन यह एकमात्र सच्चाई नहीं है। जैसे ही यह विकसित होता है, यह नए रूप धारण करेगा और नए सत्यों को प्रकट करेगा। इसका अर्थ है नकारात्मक से सकारात्मक, सकारात्मक से तटस्थ, और तटस्थ से दिव्य तक विकसित होना।

अब, गलती करने की भावनाओं के बोझ को, सृष्टि के प्रति आपकी गलत राय को, एक बार फिर से ध्यान दें। उन्हें स्वतंत्रता दें और उन्हें अपने आप से मुक्त करें। तब, आप स्पष्ट रूप से उन चीजों में छिपे हुए उपहार और रहस्य को देख पाएंगे जिन्हें आप पसंद नहीं करते हैं। जब आप जिन चीजों से नफरत करते हैं उनके साथ लड़ना बंद कर देंगे, तो वे आपको बताएंगी कि आप कौन हैं। जब आप स्वच्छ होकर पूरे प्यार और स्वतंत्रता के साथ सबसे चुनौतीपूर्ण और रोमांचक चीजों को देखते हैं, तो आप उनमें सत्य और ज्ञान पाएंगे, और पिछले जीवन की भूमिकाएं विकसित होंगी और आपको आनंद देंगी।

पिछले जन्मों को कैसे आमंत्रित करें?

पिछले जन्मों के साथ व्यवहार करना बच्चों के साथ व्यवहार करने जैसा है। क्योंकि वे बच्चों की तरह व्यवहार करते हैं। एक माँ या पिता की तरह, आप उन्हें अपने आप में वापस स्वीकार करें। सभी पिछले जन्म की भूमिकाओं - दर्द, डर, अपमानित - को वापस घर आने दें, जैसे कि एक माता अपने बच्चे के लिए स्कूल से घर वापस आने के लिए अपना घर तैयार करती है। क्योंकि जब वे वापस आते हैं, तो वे अपने विचारों, विश्वासों, मनोभावों और अनुभवों को अपने साथ लाते हैं।

वास्तव में, अधिकांश पिछले जन्म की भूमिकाएं आपके प्रेमपूर्ण स्वागत की प्रतीक्षा कर रही हैं। वे थक गए हैं और अब आराम करना चाहते हैं। पिछले जन्म की भूमिकाएं जिन्होंने दुख, दर्द, और संघर्ष किया है - वे केवल एक सुरक्षित, आरामदायक, और स्वीकार्य स्थान चाहते हैं। यदि आप डर, दर्द, या थकान का अनुभव कर रहे हैं, तो यह सभी इन पिछले जन्म की भूमिकाओं से आ रहा है। फिर आपको यह करने की आवश्यकता है कि आप स्वीकृति और प्रेम के साथ ध्यान करें और अपने आप को स्वीकार करें, उन्हें घर वापस आमंत्रित करें।

कुछ भूमिकाएं आपके साथ क्यों एकीकृत नहीं हो रही हैं?

कुछ पिछले जन्म आपके प्रति प्रेम हैं, लेकिन फिर भी आपके साथ विलीन नहीं होना चाहते हैं। इसके बजाय, वे आपके जीवन को नरक बनाते हैं और आपकी ऊर्जा को खत्म करते हैं। कुछ पिछले जन्म की भूमिकाएं आपके साथ नाराज़ हैं क्योंकि भूतकाल में, उन्हें दूर धकेल दिया गया था और उन्हें पीड़ित होने दिया गया था। उन्होंने भगवान से बचाव और सुरक्षा के लिए प्रार्थना की, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। इसलिए, उन्होंने हर चीज पर सवाल उठाना शुरू कर दिया और अब वे आपको भगवान के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

यहां तक कि जब वे आपके चेतना में वापस घर आते हैं, तो वे आपके साथ लड़ते रहते हैं, परेशानी पैदा करते हैं और आपके जीवन को कठिन बनाते हैं। वे पिछले समय आप मदद न करने के कारण सहन की गई पीड़ा का बदला लेना चाहते हैं। ये पिछले जन्म एक प्रेमपूर्ण गले नहीं चाहते हैं; इसके बजाय, वे आपके जीवन में समस्याएं पैदा करते हैं, जैसे कि आर्थिक, रिश्ते या स्वास्थ्य समस्याएं।

हालांकि, वे केवल सच्चे अधिकार का सम्मान करते हैं। वे एक दयालु या करुणामय आवाज के बजाय एक आज्ञा देने वाली आवाज का पालन करते हैं। जब ये पिछले जन्म आपके मन में बोलना शुरू कर देते हैं या अटकी हुई ऊर्जा के कारण शारीरिक दर्द पैदा करते हैं, तो पहचानें कि यह आजाद होने का समय है। उन्हें दृढ़ता से बताएं कि आप इसे जारी नहीं रहने देंगे। यह आज्ञा आपके मूल, आपकी दिव्य शक्ति से आनी चाहिए; अन्यथा, वे आपकी उपेक्षा करेंगे। एक तरह से, वे आपके विकास में मदद कर रहे हैं, क्योंकि जब आप उच्च स्तर के चेतना में पहुंचने के बाद ही वे आपके मार्गदर्शन का पालन करेंगे।

तो, आपको प्रत्येक भूमिका के साथ अलग तरीके से व्यवहार करना होगा; एक दवा सभी को ठीक नहीं कर सकती। केवल जब आप अलग-अलग उपकरणों का उपयोग करेंगे, जैसे कि धीरे से बोलना, समर्पण करना, प्रेम से बोलना, मजाक करना, डांटना, चिल्लाना, रोना, आज्ञा देना, उकसाना और परेशान करना, तब आपको परिणाम मिलेंगे। तब आपको शब्दों की शक्ति की दिव्य समझ विकसित होगी।

यदि आप ऐसी पिछले जन्म की भूमिकाओं के साथ निपटने की कोशिश करते हैं और असफल होते हैं, तो तुरंत रुक जाएं और भगवान तक पहुंचने का संकल्प करें। भगवान तक पहुंचने के बाद, उनसे पूछें कि वे आपको ऐसी भूमिकाओं के साथ कैसे निपटना सिखाएं। केवल जब आप भगवान के साथ एकाकार होंगे, तभी पिछले जन्म की भूमिकाओं के कारण होने वाली समस्या गायब हो जाएगी। इसलिए, अपने वर्तमान ज्ञान के साथ समस्या का समाधान एक या दो बार करने की कोशिश करें। यदि यह काम नहीं करता है, तो तुरंत समस्या को भगवान के हवाले

कर दें और उनमें एकाकार हो जाएं। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, 'पिघलजाओ' और 'आत्मसमर्पण' विषयों को पढ़ें।

एक ही समस्या को वर्षों तक अपने वर्तमान ज्ञान के साथ अकेले हल करने की कोशिश न करें। कई लोग ऐसा कर रहे हैं। मैंने भी 2004 तक ऐसा किया। यदि मैं ऐसा कहता हूं, तो कई लोग कहेंगे, 'लेकिन क्या हमें मानव प्रयास नहीं करना चाहिए?' हाँ, मानव प्रयास आवश्यक है, लेकिन समय बर्बाद न करें। तब तक प्रयास न करें जब तक आप मर नहीं जाते। एक या दो बार प्रयास करें, और यदि यह काम नहीं करता है, तो भगवान की उपस्थिति में पहुंचें।

हाँ, प्रेम और स्वीकृति सब से महान तरीके हैं, लेकिन दूसरों को प्रेम करने के बजाय, अपने आप को प्रेम और स्वीकार करना ज्यादा जरूरी है। नहीं तो, आप अपने आप से अधिक, पिछले जन्म की भूमिकाओं से प्रेम करना शुरू कर देंगे या उन्हें अपने जीवन को नियंत्रित करने और बर्बाद करने की अनुमति देंगे, या एक पीड़ित की तरह उनकी परेशानियों को सहन करेंगे बिना कुछ कहे, जो प्रेम नहीं है।

इसका मतलब है, उनसे सामना करना और साहस के साथ कहना है, 'मुझे परेशान न करो!' मतलब अपने आप को प्रेम करते हुए अपने पिछले जन्मों को 'बस, बहुत हुआ!' कहने जैसा है, और उन्हें आपके साथ जुड़ी हुई हर चीज को दूर ले जाने की आज्ञा देना है। ऐसा करना अनंत प्रेम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए, 'बस, बहुत हुआ!' कहने से न डरें।

यहाँ ध्यान देने वाली एक और बात यह है कि, जब आप पिछले जन्म की भूमिकाओं द्वारा होने वाले दर्द को समझने की स्थिति में नहीं होते हैं, और वे भी आपको नहीं समझते हैं, तो आपको 'बस' कहना पडता है। इसका मतलब है कि अहंकार के कारण आपने सोचा कि मुझे इस निम्न, सस्ते और धोखेबाज भूमिका से संदेश क्यों लेना चाहिए; उसी तरह, बदला लेने के लिए आपके प्रति गुस्सा रखकर, धोखेबाज भूमिका अपनी महानता के बारे में स्पष्ट रूप से

आपको समझाने में असमर्थ होना, यही गलतफहमी का कारण है। इसलिए, इसका समाधान यह है कि आप दोनों अस्थायी रूप से अलग हो जाएं और तब तक अपने सफर को अकेले जारी रखें जब तक आप दोनों एक दूसरे को पूरी तरह से समझ नहीं लेते, और फिर आप सही समय पर फिर से मिलेंगे।

उदाहरण के लिए, ऑडिटर प्रैक्टिस करने से पहले, मैं एक वरिष्ठ ऑडिटर के अधीन काम करता था। मैंने उन्हें कई नए ग्राहकों का परिचय किया, लेकिन उन्होंने मुझे वादा किया हुआ कमीशन नहीं दिया। फिर मैं गुस्से में आया और उन्हें छोड़ दिया, भले ही मुझे पता था कि मुझे प्रेम के साथ सब कुछ मिलाना होगा। मैंने उसी प्रदेश में अपना स्वयं का प्रैक्टिस शुरू किया और कई ग्राहकों को आकर्षित किया।

जब मेरा प्रैक्टिस अच्छा चल रहा था, एक दिन मैंने अपने अंदर से एक प्रश्न सुना। 'आप ऑडिट प्रैक्टिस में कैसे सफल हो रहे हैं?' मैंने कहा कि मैंने अपने प्रयास और अपने भगवान की मदद से ऐसा किया। फिर मैंने अपने अंदर से सुना, 'हाँ, आपने अपनी प्रतिभा से ऐसा किया, लेकिन आपके सीनियर ऑडिटर ने भी आपकी मदद की। अगर उन्होंने आपको धोखा नहीं दिया होता, तो आप अभी भी उनके अधीन काम कर रहे होते, "सर, सर" कह रहे होते।' इसलिए, अपने अंदर से उन्हें धन्यवाद देने और ऐसी पिछले जन्म की भूमिकाओं के साथ मिलाने के लिए मुझे कहा गया।

इसके बाद, मुझे एक सही और अत्यधिक आनंद की भावना महसूस हुई। क्योंकि मेरे मित्र जो उनके अधीन काम कर रहे थे, वे अभी भी उनके अधीन काम कर रहे हैं। तुरंत, मुझे उनके प्रति और मेरे अंदर उनके जैसी पिछले जन्म की भूमिकाओं के प्रति प्रेम महसूस हुआ। यह भी सही लगा कि मैंने अज्ञानता के कारण उन्हें पहले दूर धकेल दिया था। फिर, जैसा कि मेरी आंतरिक आवाज ने सुझाया, मैंने फिर से विश्वासघात से जुड़ी पिछले जन्म की भूमिकाओं को स्वीकार किया और एक दूसरे को समझने के बाद एकाकार हो गया।

इसके अलावा मैंने पिछली जन्म के भूमिकाओं से इस तरह प्रार्थना किया, जब भी मैं दूसरों पर बहुत अधिक भरोसा करता हूं, तुम आओ और एक स्थिति बनाओ ताकि दूसरा व्यक्ति मुझे धोखा दे। मैंने यह भी महसूस किया कि, जब मनुष्य कुछ चाहता है तो परमात्मा कुछ और चाहना भी एकदम सही है। क्योंकि परमात्मा कुछ और नहीं चाहा होता, मेरा विकास नहीं हुआ होता। इसलिए, मेरे प्रिय भगवान, जब भी मैं बाहरी दृष्टि में फंस जाऊं, तो मुझे आंतरिक आवाज के माध्यम से मार्गदर्शन करें। यदि मैं न सुनूँ, तो किसी न किसी रूप में आओ और समस्या पैदा करो। क्योंकि उस समस्या का समाधान बाहर से नहीं मिल सकता। तभी मैं अंदर की ओर मुड़ूँगा, समस्या को अपना गुरु मानूँगा, उससे ज्ञान प्राप्त करूँगा, और अपने भगवान की ओर बढ़ूँगा।

इसलिए, पिछले जन्म की भूमिकाओं को अकेला छोड़ने के लिए कहना, मतलब उन पर अपना ध्यान रोकना और अपने असली लक्ष्य, अपने भगवान की ओर यात्रा करें। उन्हें कहना कि वे केवल तभी आएं जब वे स्वाभाविक रूप से आपके लिए प्रेम विकसित करें, और भले ही वे न आएं, आपको कुछ नहीं खोना होगा। उनका इंतजार न करें, और आप स्वच्छ होकर अपने भगवान की ओर यात्रा करें।

इस तरह आप यात्रा करते रहते हैं और रास्ते में जिन पिछले जन्म की भूमिकाओं के साथ मिल सकते हैं, उन्हें एकीकृत करके आगे बढ़े। यदि आप सब कुछ दिव्य दृष्टिकोण से देखने की आकांक्षा के साथ यात्रा करते हैं, तो क्रोध से भरे हुए भूमिकाएं आपके आध्यात्मिक अभ्यास से प्रसन्न होंगी और आपके साथ एकाकार हो जाएंगी। यहाँ, एकाकार होने का अर्थ है कि जब आप प्रेम के साथ एक दूसरे के अनुभव साझा करते हैं, तो आप दोनों एक दूसरे को पूरी तरह से समझते हैं।

इस तरह यदि आप सभी पिछले जन्म को एकीकृत करने में सफल होते हैं, तो आपको यह लाभ मिलेगा: आप अपने आप में शांति महसूस करेंगे, आपका मन भी शांत हो जाएगा, 'मैं सर्वत्र हूँ - सब कुछ मुझमें है' यह भावना आपके अंदर स्थापित हो जाएगी, आप सब कुछ में भगवान को देखेंगे, आप द्वैत संबंधी जन्मों के चक्र को समाप्त करेंगे और न्यूएनर्जी दुनिया

में प्रवेश करेंगे, और जब ये सभी एक साथ आते हैं, तो आपको वर्णनातीत परमानंद का अनुभव भी होगा।

इसलिए, मेरे अनुभव के आधार पर, मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि, आप पिछले जन्म की भूमिकाओं को एकत्र करें, कर्म सिद्धांत से परे जाएं, अपनी आत्मा और परमात्मा को अपने जीवन में आमंत्रित करें और अपने सभी हिस्सों के साथ हमेशा खुशी से रहें और मुक्ति प्राप्त करें।

सच्चिदानंदस्वरूप

मैंने 'स्थूल से सूक्ष्म - क्वांटम विजन' विषय में चार स्तरों की व्याख्या की है - 1. अंग स्तर, 2. हड्डियां स्तर, 3. परमाणु स्तर, और 4. निराकार ऊर्जा-चेतना स्तर।

चूंकि निराकार ऊर्जा-चेतना एक अक्षय पत्र की तरह है, मैंने सुझाव दिया है कि आप प्रतिदिन सूक्ष्म के साथ एकाकार हों और जो आपको चाहिए उसे स्थूल में लाएं।

इसका अर्थ है कि यदि आप अंग स्तर पर हैं, तो आपको केवल अंग ही दिखाई देंगे। यदि आप हड्डियां स्तर पर हैं, तो आपको केवल हड्डियां ही दिखाई देंगी। यदि आप परमाणु स्तर पर हैं, तो आपको केवल परमाणु ही दिखाई देंगे या उनका अनुभव होगा। यदि आप निराकार स्तर पर हैं, तो आप निराकार के साथ एकाकार हो जाएंगे। वहाँ केवल परमानंद (सच्चिदानंद स्वरूप) ही शेष रहता है।

आप प्रतिदिन पिछले जन्म की भूमिकाओं को एकीकृत कर रहे हैं, अंदर की यात्रा कर रहे हैं, और दिव्य की ओर पहुँच रहे हैं। लेकिन कुछ पिछले जन्म की भूमिकाएं, साथ ही साथ इस

दुनिया में मौजूद भूमिकाएं, दिव्य की ओर इस यात्रा में आपके साथ शामिल होने से इनकार कर देती हैं। तो फिर क्या? जब समस्त सृष्टि, आपके सहित, एक साथ आती है, सूक्ष्म क्षेत्र की यात्रा करती है, एकाकार होती है, और फिर एक ही इरादे के साथ सहयोगपूर्वक भौतिक दुनिया में लौटती है, तभी आपकी इच्छाएं पूरी होंगी।

भौतिक दुनिया में, हर चीज को आपके आदेशों का पालन करना होगा और आपकी बात माननी होगी, जैसे कि पुतलियाँ जो आपके इशारों पर नाचती और गाती हैं। तब ही आप अपनी अभिलाषाओं को तत्काल प्रकट कर सकते हैं। ऐसा होने के लिए, आपको उस भगवान के साथ एकाकार होना होगा जिसके शब्दों को ये भूमिकाएं शुरू से सुनती आ रही हैं और उस भगवान को इस भौतिक दुनिया में लाना होगा। चूंकि सब कुछ ऐसे हो रहा है जैसे कि भगवान इसे निर्देशित कर रहा है, तो इस भगवान को भौतिक दुनिया में लाएं। केवल तभी यह दुनिया हमेशा दिव्य दुनिया के रूप में अनुभव की जाएगी।

इसलिए, यह बेहतर है कि कुछ पिछले जन्म की भूमिकाएं हमारे साथ यात्रा न करें। वे भौतिक जगत में स्थिर रहनी चाहिए और रहेंगी। इसलिए, हमें अनिवार्य रूप से परमात्मा को भौतिक जगत में लाना होगा। केवल तभी हम एक अद्भुत जगत में प्रवेश कर सकते हैं, जो एक अक्षय पात्र की तरह है, जहाँ विचार तत्काल वास्तविकता बन जाते हैं, और हम सीधे अनुभव कर सकते हैं कि हम सृष्टिकर्ता हैं।

इसलिए, इस स्थूल जगत और इसके अंशों को बदलने की कोशिश में अपनी सीमित ऊर्जा बर्बाद करने के बजाय, अपनी शक्ति और ज्ञान का उपयोग करके इस सृष्टि को नियंत्रित करने वाले दिव्य को इस भौतिक जगत में लाएं। केवल तभी आप ऊर्जा-चेतना से बने जगत का अनुभव कर सकते हैं, अर्थात् ऊर्जा-रूपों का आनंदमय नृत्य को अनुभव करते हुए आप स्वयं उस आनंदमय नृत्य बन जाएंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**